रात्रि क्लास 9/7/68 ओमशान्ति शिवबाबा और वरसा याद है?

कोई अनुभव सुनाते हैं, कोई सर्विस–समाचार सुनाते हैं। बच्चे यहाँ जो समझते हैं अनुभव सुनाते हैं। फिर अपने सेन्टर पर भी अनुभव सुनाते हैं। अनुभव बहुत खुशी उमंग से सुनाना होता है। मधुबन में बाप से क्या2 नई बातें सुनी। आते भी हैं इस ख्याल से हम बाबा के पास जाते हैं। बापदादा, है तो दोनों बाबा ना। यह भी बड़ा बाबा। इनको तो ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर भी कहते हैं। उनको फादर कहते हैं। होकर गया है जरूर। जो चीज़ हो जाती है वह फिर रिपीट करते हैं। बच्चे जानते हैं बाबा रथ में आया था। पास्ट हो गया। रथ मशहूर है। रथ पर सवार हो आते हैं। सो तो जरूर मनुष्य के रथ पर आवेंगे। तुम बच्चों को मालूम पड़ा बाप इस रथ में आते हैं। कृष्ण की आत्मा नहीं आवेगी। कृष्ण की आत्मा बहुत जन्मों के अन्त में है। तो उनको कृष्ण नाम नहीं कहेंगे। यह तुम बच्चों ने समझा है कृष्ण को श्याम और सुन्दर भी क्यों कहते हैं। नाम तो मनुष्य भी रखाते हैं; परन्तु हिस्ट्री का किसको भी पता नहीं हैं। कृष्ण गोरा पावन, सांवरा पतित। कृष्ण के भक्त सुनेंगे तो बिगर(ड़) पड़ेंगे। उल्टा–सुल्टा बोलने लग पड़ेंगे। बड़ा युक्ति से समझाना है। जैसे तुम गवर्नर पास गये। बाप ने समझाया पहले2 यह समझाना है ऊँच ते ऊँच भगवान निराकार है। निराकार आत्मा तो सभी हैं। निराकारी भव। अपन को निराकार आत्मा समझो। वह निराकार परमात्मा। सदैव परमधाम में रहते हैं। परमधाम में रहने वाली परम आत्मा। बाकी आत्माएँ तो तुम सभी हो। अपने2 शरीर में पार्ट बजाते हो। जो भी आत्माएँ हैं सभी अविनाशी हैं। तुम कहते भी हो हर 5000वर्ष बाद हम बाप से वही वरसा लेते हैं जो कल्प2 लेते हैं। वह है हद का ड्रामा यह है बेहद का ड्रामा। सन्यासी हद का सन्यास करते हैं। रहते फिर भी पुरानी दुनिया में हैं। तुम बच्चे जानते हो सम्बन्धी आदि हैं; परन्तु ममत्व निकल जाता है। बुद्धि का योग उस तरफ लग जाता। बाप को याद करते करते सतोप्रधान बनना है। बेहद के बाप से बेहद का वरसा भी लेना है नई दुनिया का। इसलिए पवित्र जरूर बनना है। बच्चे आज्ञा भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मानते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो और कोई भी देहधारी को याद न करो। बाप को याद करो। गवर्नर को भी समझाना पड़े। बाप कहते हैं मुझ बाबा की याद में रहने से तुम पावन बन जावेंगे। ऊँच ते ऊँच पतित–पावन बाप कहते हैं मुझे याद करो। म्युजियम आदि में सुनते तो बहुत हैं। समझते नहीं। आगे चलकर वह भी सुनने सुनाने लग पड़ेंगे। सतयुग त्रेता में जो संख्या होती है वह आवेंगे। आकर सुनेंगे। जब तक ब्राह्मण न बने हैं देवता बन न सके। पिछाड़ी के समय बहुत आवेंगे। बच्चों को थोड़ी तकलीफ सहन करनी पड़ती है बांधेलियों को। यह भी धीरे2 बन्धन टूटते जावेंगे। अखबार आदि में सुना है यह जादू डालते हैं। भगवान को जादूगर कहा जाता है ना। उनके सिवाय इतने बच्चों को कौन सम्भाल सकते हैं। दिन प्रतिदिन टाइम कम हो जाता है। प्रजा बहुत बनानी है। नहीं तो राजा कैसे बनेंगे? राजा वह बनेंगे जिन्होंने रईयत बनाई है। रईयत का राजा तो बनेंगे ना। कोशिश करनी चाहिए अपनी पढ़ाई की। सन्यासियों का है हद का त्याग। तुम्हारा है बेहद का त्याग। सन्यासियों को भी सुख बहुत है पैसे का। प्यार करते हैं, घर में बुलाते हैं। वहाँ तो ऐसी बातें नहीं। साधु, सन्यासी आदि को भी घर(वालों) को भी घर में बुलाया जाता है। वह ज्ञान नहीं। वह है भक्ति। अभी बच्चे जानते हैं हमको सभी भूल जाना है। अभी घर जाना है। मुसाफिरी पूरी हुई। पहले मुसाफिरी तो अपने राज्य में करते हो। फिर पराये राज्य में आने से दुख होता है। छी–छी दुनिया है ना। इस दुनिया में मनुष्यों को अनेक प्रकार की फिकरात है। सतयुग में कोई भी फिक्र की बात ही नहीं। फिक्र से फारग़ अभी होना पड़े। फिक्र से फारग हो शरीर छोड़ेंगे तब ऊँच पद पावेंगे। मददगार जो बनते हैं उनको हिस्सा बहुत अच्छा मिलता है। विश्व की राजाई में तुम सभी हिस्सेदार हो; परन्तु जो जितना मेहनत करेंगे उतना ही हिस्सा। सारा मदार पुरुषार्थ पर रहता है। बाप को पहचानते हैं, समझते हैं। बाप वरसा देने आये हैं। तो उस पढ़ाई से दिल हट जानी चाहिए। याद की यात्रा बहुत टाइम लेती है। बाप सिखलाते हैं। ऐसे–ऐसे करो। इम्तहान के दिनों में बहुत मेहनत

करते हैं। आगे चलकर जोर से पुरुषार्थ करेंगे। अभी शरीर छूट जाये तो। कोई भी बात पर ठहरना न है। ऐसे नहीं टाइम पड़ा है। ऐसा कच्चा न बनना चाहिए। बच्चों को श्रीमत पर ध्यान देना है। ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष कहते हैं। 60 वर्ष में बाप ने प्रवेश किया। बाकी 40, उनमें भी तुम कितना पुरुषार्थ करते आये हो। 32 वर्ष। बाकी जाकर आठ वर्ष रहा है। टाइम भी एक्युरेट आठ वर्ष ही रहते हैं। छोटा झाड़ है वृद्धि होती जाती है।

मीठे–मीठे बच्चों को बाप को याद करना है अच्छी रीत। रात को सोते भी याद में। खुशी होगी। फिर फालतू संकल्प आदि नहीं आवेंगे। थकावट है तो लेट जाओ। उठते–बैठते, चलते–फिरते प्रैक्टिस करो तो तुमको बहुत अच्छा लगेगा। जैसे लौकिक बाप के लवली बच्चे होते हैं तो प्यार करते हैं; क्योंकि बच्चे बाप की बहुत खातरी करते हैं। यहाँ बच्चों को बाप की खातरी यह करनी है। मदद करनी है सभी को कहो बाप को याद तो वरसा मिलेगा। सतोप्रधान बनना माना वरसा लेना। यहाँ रहने से पुरानी दुनिया बिल्कुल याद न रहनी चाहिए। घर और बाप। दो अक्षर है ना। अच्छा, मीठे2 बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट। नमस्ते।